गुप्तकालीन मुद्राओं पर मंदारिन (मेंडरियन) अंकों में अंकित वर्ष

ज़फर उल्लाह खान

राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर पाये जाने वाले मुद्राओं के दफीनों को भारतीय निखात निधि अधिनियम, 1878 के अन्तर्गत बने राजस्थान निखात निधि नियम, 1961 की अनुपालना में शासन की स्वीकृति के उपरान्त विभाग की मुद्रा शाखा द्वारा इन्हें अवाप्त किया जाता है। यह मुद्राएँ निदेशालय, जयपुर एवं राजकीय संग्रहालयों में संग्रहित की जाती रही हैं। विभाग के अधीनस्थ कार्यालयों के राजकीय संग्रहालयों एवं निदेशालय में विभिन्न काल की लगभग 2,21,359 मुद्राएँ विभाग के पास मौ़जूद हैं। निदेशालय, जयपुर में विभाग की स्थापना के पश्चात् कुल 272 दफीने अवाप्त/क्रय किये गये हैं। जिनके अधीन विभिन्न काल की लगभग 50 हज़ार से अधिक मुद्राएँ निदेशालय में अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं। विभाग द्वारा वेबसाईट पर लगभग 2,21,359 मुद्राओं के फोटोग्राफ www.ancientcoins.rajasthan.gov.in में राजकॉम के पोर्टल पर coins digitization के नाम से वेबसाईट पर अध्ययनार्थ एवं शोधार्थ प्रसारित कर रखा हैं। इस विभागीय वेबसाईट पर संग्रहण का हॉर्ड नम्बर, प्लेट नम्बर एवं कॉइन नम्बर के आधार पर प्रत्येक मुद्रा को अलग-अलग देखा जा सकता है। इस वेबसाईट पर गुप्तकालीन मुदाओं का फोटो, सिक्कें की धातु, सिक्के का आकार एवं भार प्रत्येक मुद्रा को आवंटित नम्बर पर उपलब्ध है। विभागीय संग्रहित मुद्राओं का अध्ययन उपरान्त *गुप्तकालीन मुद्राएँ,* संस्करण 2018 में क्लासिफाईड केटलॉग तैयार प्रकाशित किया गया है।

राजस्थान पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग में गुप्तकालीन स्वर्ण एवं चांदी की मुद्राएँ संग्रहित हैं। विभाग के संग्रह में उपलब्ध 2.25 लाख मुद्राओं में से गुप्तकाल की 216 मुद्राओं का कालक्रमानुसार केटलॉग तैयार किया गया है। इसमें सिक्कों पर अंकित मूल मुद्रा लेख, मुद्रा का भार, आकार, प्राप्ति स्थल व धातु का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है। इस पुस्तक में मुद्रा पर अंकित ब्राह्मी लिपि का देवनागरी एवं अंग्रेजी लिपि में लिप्यांतर अर्थ सहित प्रकाशित किया है। साथ में मुद्रा के अग्रभाग एवं पृष्ठभाग के बड़े फोटोज़ का प्रकाशन भी किया गया है। इसमें सोने एवं चाँदी की विभिन्न वर्षो में अलग वर्षो (टकसालों/मानोग्राम) में ढाली गई मुद्राएँ सम्मिलित हैं।

गुप्तकालीन मुद्राओं का क्लासिफाईड केटलॉग के अध्ययन के समय यह नया शोध कार्य किया गया है। भारतीय इतिहास में गुप्तकाल स्वर्णयुग है। इस काल में भारतीय संस्कृति का चहुँमुखी विकास हुआ। यह विकास मुद्रा निर्माण के क्षेत्र में भी दिखलाई पड़ता है। गुप्त सम्राटों ने गोल आकार में सोने, चाँदी और ताम्बे के सिक्के चलाये थे। भारत के एक बड़े भू-भाग पर गुप्तकालीन सम्राटों के सिक्कों के दफीने मिलते हैं।

कुषाण साम्राज्य चीन की तरफ से भारत में आया था। कुषाणों के बाद सत्ता सम्भालने के फलस्वरूप यह स्वाभाविक है कि गुप्तकाल के प्रारम्भिक सिक्कों पर कुषाणों के सिक्कों का प्रभाव दिखाई देता है। कुषाण शासकों की स्वर्ण मुद्राओं के अनुरूप ही गुप्तकाल में स्वर्ण मुद्राएँ प्रचलित की गयी थी। कुषाण मुद्राओं के अनुरूप ही गुप्तकालीन मुद्राओं पर चीनी अंक के अनुसार वर्ष अंकित किये गये प्रतीत होते हैं। कुषाण सिक्कों पर इस चिह्न को मानोग्राम लिखा गया है, जबकि कुषाण एवं गुप्त मुद्राओं के पृष्ठभाग पर यह चिह्न मंदारिन (मेंडरियन) अंकों में मुद्रा के ढालने का वर्ष मुद्रित किया गया है। मुद्रा ढालने के वर्ष को मुद्राओं में बड़े छायाचित्रों में स्पष्ट देखा जा सकता है।

कुषाण एवं गुप्त मुद्राओं पर मुद्रित विभिन्न अलग वर्षो का मंदारिन अंकों से मिलान करने के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि विभिन्न विद्वानों ने जिस चिह्न को मानोग्राम या टकसाल का चिह्न लिखा है वास्तव में, यह चिह्न मुद्रा के ढालने का वर्ष है। यह चिह्न कुषाण एवं गुप्तकालीन मुद्रा पर मुद्रित हुआ है। इस चिह्न के अध्ययन का विवरण अग्रानुसार तालिका में किया है:-

प्र. सं.	गुप्तकालीन मुद्राएँ पुस्तक में मुद्रा का क्रम संख्या, सम्राट का नाम, शासन काल एवं मुद्रा का फोटो	मुद्रा पर मुद्रित वर्ष	मुद्रा पर अंकित वर्ष तथा मुद्रा के अनुसार परिवर्तित वर्ष
1.	श्रीगुप्त 270–290 ई.	–	–
2.	घटोत्कच 290–305 ई.	–	
3.	(1) H_BIK15_P2_Co.no._68 चन्द्रगुप्त 305–325 ई. राजा–रानी प्रकार अग्रभाग पृष्ठभाग  	 	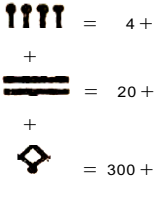 = 4 + + = 20 + + = 300 + कुल योग = 324ई.

4.	(2) H_CMJ1_P2_Co.no._62 काँचगुप्त (325–330 ई.) **चक्रध्वज प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	= 4 + + = 10 + + = 300 + कुल योग = 314
5.	(3) H_JOD2_P2_Co.No._71 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **धनुर्धर प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग		= 3 + + = 20 +
			= 300 + कुल योग = 323
6.	(4) H_CMJ1_P2_Co.No._60 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **ध्वज प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	= 4 + + = 20 + + = 300 + कुल योग = 324
7.	(5) H_AJM1_P66_Co.No._2286 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **दण्ड़ प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	= 4 + + = 20 + + = 300 + कुल योग = 324
8.	(6) H_AJM1_P65_Co.No._2258 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **दण्ड़ प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	= 4 + + = 10 + + = 300 + कुल योग = 314
9.	(7) H_AJM1_P31_Co.No._1083 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **दण्ड़ प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग		= 4 + + = 10 + +

	 		 = 300 + कुल योग = 314
10.	(8) H_AJM1_P66_Co.No._2276 समुद्रगुप्त (330–370 ई.) **कृतान्त परशु प्रकार (दायीं ओर सेवक)** अग्रभाग पृष्ठभाग  	 	 = 4 + + = 10 + +  = 300 + कुल योग = 314

11.	(9) H_JOD2_P3_Co.No._74
	 समुद्रगुप्त (330–370 ई.)
	 अश्वमेध प्रकार
	 अग्रभाग पृष्ठभाग
	  
		 	 = 300 +
			 +
			  = 30 +
			 +
			  = 6 +
			 कुल योग = 336

12.	रामगुप्त (370–372 ई.)	–	–
13.	(12) H_AJM1_P65_Co.No._2272 चन्द्रगुप्त (305–325 ई.) चन्द्रगुप्त–।। (375–414 ई.) **धनुर्धर प्रकार (प्रत्यंचा अन्दर की ओर)** अग्रभाग पृष्ठभाग  	 	 = 4 + +  = 20 + +  = 300 + कुल योग = 324
14.	(18) H_JOD40_P1_Co.No._33 चन्द्रगुप्त–।। (375–414 ई.) **सिंह निहन्ता प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग  	 	 = 4 + +  = 20 + +  = 300 + कुल योग = 324

15.	(20) H_AJM1_P65_Co.No._2271 चन्द्रगुप्त–।। (375–414 ई.) **छत्र प्रकार** अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	 = 4 + + = 10 + +  = 400 कुल योग = 414
16.	(23) H_JOD2_P3_ Co.No._82 कुमारगुप्त **धनुर्धर प्रकार** **(प्रत्यंचा व नाम अन्दर की तरफ)** (414–455 ई.) अग्रभाग पृष्ठभाग 	   	 = 3 + +  = 30 + +  = 400 + कुल योग = 433

यह विश्व गतिमान है, प्रत्येक वस्तु का विकास कालचक्र के अनुसार परिवर्तित होता रहा है। इस प्रकार विश्व स्तर पर लिपि का भी विकास हुआ है। विश्व में क्षेत्रानुसार, चार प्रमुख लिपियों का विकास कालक्रम के अनुसार देखा जा सकता है। प्रारम्भ में लिपि के स्थान पर चिह्नों का उपयोग किया जाता था। धीरे–धीरे मानव विकास के साथ लिपि को विकास हुआ। प्राचीन चार लिपियों के आधार पर ही समस्त क्षेत्रों में अन्य लिपियों का विकास हुआ प्रतीत होता है। प्रथम, विश्व स्तर पर ग्रीक लिपि का विकास यूनान के क्षेत्र में हुआ था, ग्रीक लिपि से अन्य सभी अंग्रेजी लिपियों का विकास देखा जा सकता है। द्वितीय, विश्व स्तर पर मंदारिन (मेंडरिन) लिपि का विकास चीन क्षेत्र में हुआ था। मंदारिन लिपि से अन्य सभी चीनी लिपियों का विकास देखा जा सकता है। तृतीय, विश्व स्तर पर खरोष्ठी लिपि का विकास मध्य एशिया के क्षेत्र में हुआ था। खरोष्ठी लिपि के क्रमबद्ध विकास में ससेनियन, अरबी, एवं फारसी लिपि का विकास क्षेत्रानुसार देखा जा सकता है। चतुर्थ, विश्व स्तर पर ब्राह्मी लिपि का विकास भारतीय भू–भाग में हुआ था। अन्य भारतीय लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ हें।

इन चार लिपियों के अनुरूप ही अन्य लिपियों का विकास हुआ है। मनुष्य जो कुछ बोलता है। वही लिखता है। इन लिपियों के आधार पर ही विश्व स्तर पर अन्य सभी लिपियों का विकास स्थानीय भाषाओं के साथ साथ देखा जा सकता है।

मन्दारिन चीनी भाषाओं का एक समूह है। यह मूल रूप से अधिकांशत: उत्तरी और दक्षिणी-पश्चिमी चीन में बोली जाती है। मन्दारिन भाषा को सरलीकृत चीनी तथा परम्परागत चीनी के रूप में जाना जाता है। मन्दारिन भाषा की कई किस्में हैं। यह सभी लिपियां स्थानीय क्षेत्रों के अनुसार विकसित हुई हैं।

इस विकास के क्रम में भारतीय भू-भाग पर कुषाण शासकों ने स्वर्ण मुद्राओं का प्रचलन किया था। कुषाणों के अनुसरण में सर्वप्रथम गुप्त शासकों द्वारा अपने सिक्कों में सोने का प्रयोग किया गया था। कुषाण मुद्राओं पर एक ओर ग्रीक लिपि, दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि का अंकन किया गया था। कुषाण स्वर्ण मुद्राओं पर मन्दारिन लिपि में वर्ष अंकित है। सभी विद्वान मुद्राशास्त्रियों ने वर्ष के चिन्ह को मानोग्राम लिखा है। कुषाण मुद्राओं के अनुसरण में गुप्तकालीन मुद्राएँ चलाई गई थी। कुषाण कालीन मुद्राओं का अनुसरण करने के बावजूद गुप्त शासकों ने भारत की स्थानीय ब्राह्मी लिपि का ही अंकन अपनी स्वर्ण मुद्राओं पर कराया था। परन्तु वर्ष का अंकन कुषाण मुद्राओं के अनुरूप ही रखा गया है।

गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राओं पर अंकित वर्ष कुषाण मुद्राओं के अनुरूप किया गया है। गुप्तकालीन मुद्राओं पर अंकित वर्षो का विवेचन उपर्युक्तानुसार तालिका में दिया गया है। इससे पूर्व समस्त विद्वान मुद्राशास्त्रियों द्वारा इस चिह्न की अलग-अलग व्याख्या की गयी है। कुषाण मुद्राओं पर इस चिह्न को मानोग्राम लिखा गया है। ज्यादातर मुद्राशास्त्रियों द्वारा इसी का अनुसरण किया गया है। कुछ विद्वानों ने इस चिह्न को टकसाल का चिह्न माना है। यह चिह्न मानोग्राम या टकसाल का चिह्न नहीं है। गुप्तकालीन मुद्राओं पर यह चिह्न मन्दारिन लिपि में वर्ष के रूप में अंकित किया गया है। कुषाण मुद्राओं पर अंकित वर्ष की मुद्राएँ एवं कुषाण काल की मुद्राओं पर अंकित वर्ष का चार्ट अग्रानुसार उल्लेखित है:

(1) कुषाण मुद्राओं पर अंकित वर्ष की मुद्राएँ :

क्रम संख्या	कुषाण कालीन मुद्रा का विभाग में क्रम संख्या, सम्राट का नाम, शासन काल एवं मुद्रा का चित्र	कुषाण मुद्रा पर मुद्रित वर्ष	कुषाण काल की मुद्रा पर मुद्रित वर्ष
1.	(1) H_CMJ001_P0002_O_0058 कनिष्क कुषाण (78–101 ई.) अग्रभाग पृष्ठभाग 	 	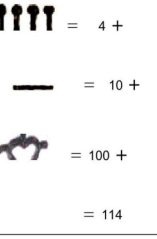 = 4 + = 10 + = 100 + = 114

2.	(2) H123_P0001_O_0001 विम कदफिसस (78–101 ई.) अग्रभाग पृष्ठभाग 		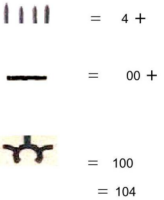 = 4 + = 00 + = 100 = 104

(2) कुषाण काल की मुद्राओं पर अंकित वर्ष का चार्ट :

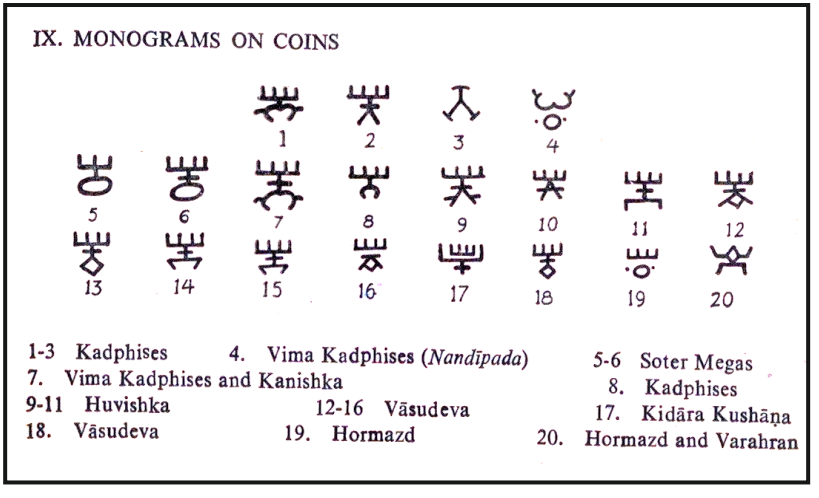

(3) गुप्तकाल के बयाना दफीनें की मुद्राएँ ढालने के वर्ष का चार्ट :

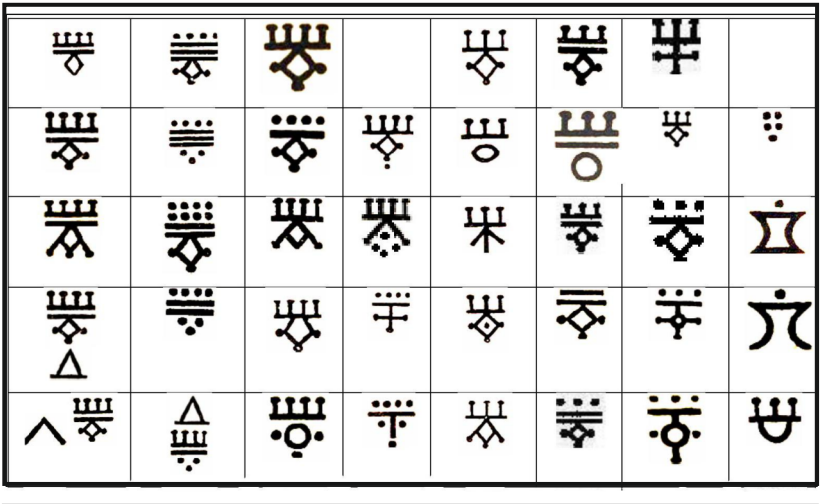

ISSN 3048-5266

उपर्युक्त विवेचनानुसार कुषाण शासकों ने अपनी मुद्राओं पर मन्दारिन (मेंडरिन) लिपि में वर्ष अंकित किया था। इस प्रकार क्षेत्रीयानुसार कुषाण कालीन मुद्राओं पर ग्रीक, खरोष्ठी एवं मंदारिन लिपि का अंकन मिलता है। गुप्तकालीन मुद्राओं पर सम्राट का नाम, उनकी उपाधियाँ ब्राह्मी लिपि में तथा मन्दारिन लिपि में वर्ष का अंकन किया गया है। राजस्थान सरकार द्वारा संग्रहित मुद्राओं का अध्ययन कर गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राओं पर अंकित मन्दारिन लिपि में अंकित वर्ष का उपर्युक्त तालिका में विवेचन प्रस्तुत किया गया है। राजस्थान सरकार के संग्रहालयों एवं मुद्राशाखा में संग्रहित मुद्राओं का केटलॉग राज्य सरकार द्वारा *गुप्तकालीन मुद्राएँ* पुस्तक में प्रकाशित किया गया है, जिसमें उक्त तालिका में प्रस्तुत समस्त मुद्राओं का पूर्ण विवरण प्रकाशित है। बयाना भरतपुर से प्राप्त दफीने की मुद्राओं पर अंकित वर्ष की तालिका भी इस शोध-पत्र में प्रस्तुत है। इस दफीने को डॉ. ए.एस. अल्तेकर द्वारा प्रकाशित किया गया है।

गुप्तकाल में भारत की आर्थिक स्थिति सुदृढ होने के फलस्वरूप भारत के बड़े भू-भाग से सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएँ मिलीं हैं। इसलिए भारतीय इतिहास में गुप्तकाल कों स्वर्ण युग कहा जाता है। मुद्राओं की धातु के आधार पर उस समय की आर्थिक स्थिति, मुद्रा लेखों के अध्ययन से लिपि का विकास तथा उन पर बने राजाओं एवं देवी-देवताओं के चित्र, उनके द्वारा पहने वस्त्राभूषणों के आधार पर तत्कालीन समय की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं भौतिक जीवन की जानकारी हमें प्राप्त होती है। उपर्युक्त तालिका में प्रस्तुत गुप्तकालीन मुद्राओं के विवेचन उपरान्त गुप्तकालीन मुद्राओं के ढालने का वर्ष भी अंकित मिल रहा है।

गुप्तकालीन मुद्राओं पर अंकित वर्ष की मंदारिन अंकों की तालिका अग्रानुसार:

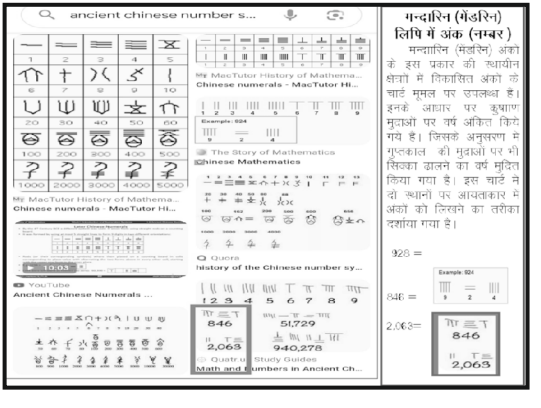

 ISSN 3048-5266

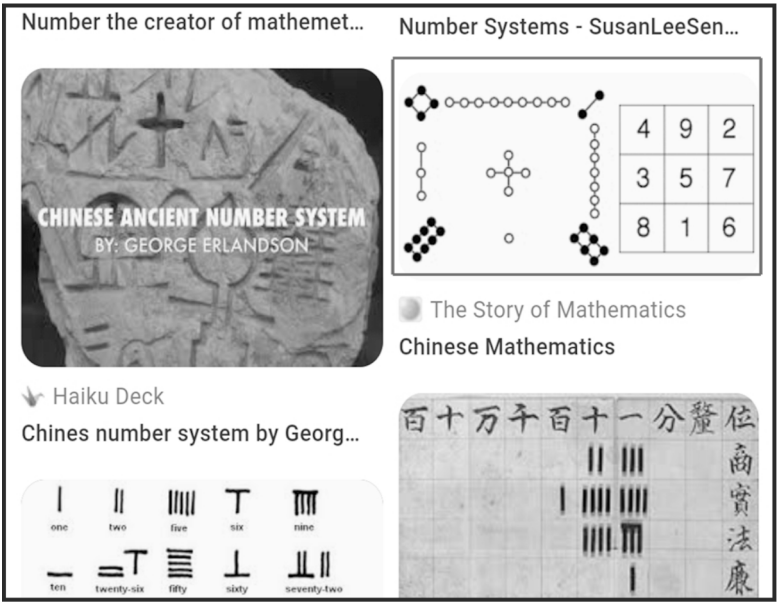

संदर्भ

1 जफर उल्लाह खान, *गुप्तकालीन मुद्राएँ,* 2018, क्लासिफाइड केटलॉग, पृ. 98–68 एवं 145–146

2 जफर उल्लाह खान, 'कुषाण कालीन मुद्राएँ' , *ऐतिहासिक मुद्राएँ* साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ. 173 एवं 175

3 राजस्थान पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग ने मुद्राओं के फोटोग्राफ www.ancientcoins.rajasthan.gov.in में राजकॉम के पोर्टल पर coins digitization के नाम से वेबसाईट पर अध्ययनार्थ एवं शोधार्थ प्रसारित हैं।

4 मन्दारिन/चाईनीज लिपि में अंक संख्या का चार्ट गूगल पर उपलब्ध है।

5 ए.एस. अल्तेकर, *कैटलॉग ऑफ द गुप्त गोल्ड कोइंस इन द बयाना होर्ड,* वर्ष 1954, प्लेट XLVIII

सेवानिवृत मुद्राशास्त्री एवं वृत्त अधीक्षक

राजस्थान पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग

जयपुर (राज.)